कड़ी 50

सैंतीसवीं चाल...

आलेख व अनुसंधानः डॉ. अनुराग शर्मा

संकल्पना और समन्वयः डॉ. बी. के. त्यागी

पात्रः

दादा जी – 70 वर्ष, पत्रकार और एक्टिविस्ट

सुनील – 43 वर्ष, वकील और सामाजिक कार्यकर्ता

आशु – 20 वर्ष, विद्यार्थी

शिवांश – 17 वर्ष, विद्यार्थी

दृश्य 1

(दो तीन लोगों के हंसने की आवाजें जैसे किसी बैठक में कई लोग बैठें हैं...)

आशुः क्या दादा जी आप भी अभी तक उन्नीस सौ बहत्तर में अटके हुए हो...

शिवांशः नहीं आशु भइया...दादा जी उन्नीस सौ बहत्तर में कैसे अटक सकतें हैं, उन्नीस सौ बहत्तर में तो दादा जी पैदा हुए थे, इसलिए वो अटके होंगे उन्नीस सौ बान्वें में...

आशुः हां शिवांश...तब तक दादा जी बीस साल के हो गए होंगे...।

(तभी रोबोटिक आवाज...)

रोबोटः दादा जी आपके शरीर में अभी–अभी ग्लूकोज का स्तर गिर रहा था...इसलिए आपके लीवर से ग्लूकोज सिक्रीट करवा दिया है...

दादा जीः थैंक्यू...आईआरपी–वन...पर...(ऊंची आवाज में) अरे भई से इसका वायस मोड किसने बदल दिया...अच्छा खासा आदमी की आवाज में बात करता था...ये रोबोट की आवाज निकालना शुरु हो गया!!!

आशुः (**हसंते हुए**) मैंने बदला दादा जी...मुझे बहुत दिनों से रोबोट की आवाज सुनने का मन था...

दादा जीः कितना फर्क आ गया है सन् दो हजार इक्कीस और दो हजार ब्यालीस में... तब जोर रहता था कि जितना हो सके रोबोट आदमी जैसे बन जाए... आवाज भी मानव की ही जैसी हो और आज करीब इक्कीस साल बाद फिर रोबोट जैसी आवाज सुनने का मन करने लगा...वैसे आशु...शिवांश तुम तो अभी बीस और सत्तरह साल के हो और मैं इस साल अक्टूबर में सत्तर का हो जाउंगा... मैं जानना चाहता हूं कि क्या तुम उस समय की कुछ भी कल्पना कर सकते हो...

शिवांशः क्या दादा जी आप अपने समय में बड़े पत्रकार रहे हो और आज भी आप सुप्रीम कमेटी के सदस्य हो...फिर भी आप ऐसे सवाल पूछते है हो...हर बात का ऑडियो वीडियो है...चाहे अपनी आंख के लैंस में सीधे देख लो या आंखे बंद करके सीधे अपने दिमाग में फिल्म चला लो...बस सोचने भर की देर है और दिमाग में लगे नैनोबॉट्स सब काम कर देते है...

आशुः अरे शिवांश ये दिमाग में जब नैनोबॉट इम्पलांट...अं...वो क्या कहा था दादा जी ने कि रोपने...हां रोपने की बात चली थी...तक दादा जी ही तो उस कमेटी में थे जिसने चिप रोपने के नियम–कायदे बनाए थे...और चिप से बात नैनोबॉट तक पहुंच गई...

दादा जीः हां आशु और ये सब उस सैंतीसवीं चाल का कमाल है?

शिवांशः दादा जी ये सैंतीसवीं चाल क्या है? इसका आपने पहले जिक्र नहीं किया? दादा जी वैसे आप ही बताओ की ये आज की दुनिया जहां हर काम रोबोट कर रहा है, यहां तक कि ध्यान लगाने में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मदद करती है...तब या कहे आज से बीस साल पहले क्या रहा होगा?

दादा जीः **(कुछ सोचते हुए)** सैंतीसवी चाल ने ही सबकुछ बदल दिया...मशीन की मानव पर विजय की शुरूआत...वो सैंतीसवी चाल...(**फिर अचानक से वर्तमान में आते हुए)** सच कहूं तो मानव अब थकान से उबर रहा है और शायद जीवन के सही मायने को ज्यादा गहराई से समझ पा रहा है, क्योंकि उसके अधिकतर कार्य तो रोबोट, मशीन आदि ने ले लिए...अब मानव एक खुली किताब है... टेक्नोलॉजी में एक लंबी छलांग लगाई है हमने अंतरिक्ष और चांद पर बस्तियां बनाई हैं और मंगल पर भी बसावट शुरू होने लगी है...हम टेक्नोलॉजी के साथ आध्यात्म के क्षेत्र में भी बहुत आगे जा चुके हैं... शायद मेरी कल्पना से कुछ बेहतर ही चल रहा है...

आशुः मैं कल नैनोबॉट्स के जरिए दादी जी से बात कर रहा था, पता चला कि उन्होंने आपसे मरने के बाद फिर से मिलने की बात कही थी, जो उनके हिसाब से ये कभी हो नहीं सकता था...पर अब तो एआई के द्वारा हम

नैनोबॉट्स अपने ब्रेन के विशेष केंद्रो पर भेजकर पुरानी यादों और पुराने लोगों को फिर से सामने ला सकते हैं...क्या ये दादी जी को तब नहीं पता था?

दादा जीः **(हंसते हुए)** असल में दो हजार तीस के आसपास एक निजी कंपनी ने ऐसा नैनोबॉट व्यवसायिक तौर पर लांच किया था जो हमारी मेमोरी में से बातें ढूंढकर सबकुछ सामने रख देता था और उन यादों के आधार पर इमेज बना देता था वो भी चलती फिरती...**हंसते हुए...**पता है कई लोग तो पहली बार ऐसी तस्वीर देखकर भूत–भूत चिल्लाने लगे थे...और आज देखो, पूरी शिक्षा ही इन्हीं नैनोबॉट्स के जरिए होती है...जो सोते समय भी सारा ज्ञान दिमाग में भर देते हैं और जब उस ज्ञान की जरूरत खत्म हो जाए तो दिमाग से इरेज़ भी कर देते हैं...

आशुः हां...पीयूष के चाचा जी ने तो अपने एक्सीडेंट की मेमोरी इरेज़ करवाई है ना... वैसे मैं तो हर प्रकार की मेमोरी के साथ जीना चाहता हूं...अच्छा...टेक्नोलॉजी क्या नहीं कर पाई? वो आपके हिसाब से क्या है?

दादा जीः वाह...ये अच्छा सवाल है, सच कहें तो अपराध खत्म नहीं हुआ, बल्कि तरीके बदल गए, ऐसे ही लोगों के जीवन स्तर में सुधार तो बहुत हुआ, पर गैर बराबरी अभी बनीं हुई है...हां भुखमरी खत्म हो गई लेकिन रोगों से लड़ाई आज भी जारी है...प्रदूषण दूर हुआ है, लेकिन आबादी बढ़ने से धरती के बाहर घर की तलाश जोर पकड़ रही है...अंतरिक्ष पर्यटन शुरू तो हुआ पर अभी भी ये यात्रा महंगी बहुत है...हां शिक्षा और रोजगार में क्रांति आई है, लेकिन शिक्षा में टेक्नोलॉजी का इतना दखल है कि ज्ञानी और कम ज्ञानी में फर्क करना ही मुश्किल हो गया है...

शिवांशः दादा जी क्या परफेक्ट दुनिया हो सकती है?

दादा जीः परफेक्ट...सब परफेक्ट ही तो है? परफेक्ट से तुम्हारा मतलब क्या है... ये तो बताओ?

शिवांशः परफेक्ट यानी कोई रोग ना हो, कोई अपराध ना हो, कोई दुखी ना हो...

आशुः वैसे शिवांश, ये तो परफेक्ट हुआ नहीं...यूनिवर्स में भी मैटर और एंटीमैटर हैं... तो हीरो के साथ विलेन तो रहेगा ही...क्यों दादा जी...

दादा जीः **(हंसते हुए)** हां, भई आशु, ये परफेक्ट की परिभाषा तो कभी बन ही नहीं पाई... अब अपने पिता जी सुनील को ही देखो, कई कानून तैयार करने में मदद की और आज जिस एआई प्रणाली के नियम बनाए थे उसी के केस को लेकर बहस में गया है...

आशुः हां, मैं अभी आई लैंस पर लाइव देख रहा था, क्या सच में एआई ने किसी मानव की हत्या की है? क्या एआई गलती कर सकती है? मानव की तरह...

दादा जीः आशु जिस बात पर आज मशीन और मानव के सहअस्तित्व पर हमेशा की तरह फिर से सवाल उठने लगा है, उस बात का इतना आसान जवाब कैसे दिया जा सकता है, जांच खत्म होने पर सब सामने आ जाएगा। वैसे अभी तक एआई से कोई गलती नहीं हुई है, वो तो अपने में समाए डाटा के आधार पर निर्णय लेती है और डाटा के अनुसार स्वयं को ठीक करने की प्रणाली भी बहुत अच्छी हो गई है। किसी मानव को हानि पहुंचाने की तो एआई से कल्पना भी नहीं की जा सकती...

शिवांशः पर ऐसा हुआ तो है...

आशुः दादा जी, पापा भी तो आपके वाला पक्ष रख रहे हैं...पर निर्णय भी तो एआई प्रणाली को करना है और उससे कोई गलती तो हो नहीं सकती...

दादा जीः वैसे उस सैंतीसवीं चाल ने ये स्थापित कर दिया था कि एआई प्रणाली मानव से भी अधिक सृजनशील...अधिक इंटेलिजेंट हो सकती है...**(कुछ सोचते हुए)** वो सैंतीसवी चाल...**(वर्तमान में लौटते हुए)** हां...तो बात एआई की गलती की हो रही है...देखो चैटबॉट लोगों को बिछुड़े हुए लोगों की कमी का अहसास नहीं होने देता और कितना सुकून देता है और आजतक लोगों की मानसिकता और समझ अनुसार चैटबॉट की बातों में कोई गलती नहीं देखी गई...इसी से एआई खुद इवोल्व होने में सक्षम है, ये बात ही तो उसे मानव की तरह गलतियों का पुतला नहीं बनाती...

शिवांशः दादा जी या तो आप हमें वो सैंतीसवीं चाल का मामला बता दो...या फिर बार बार बोलना छोड़ दीजिए...

दादा जीः ठीक है भई...ये सैंतीसवीं चाल का किस्सा बाद में...देखो एआई किसी विशेष कार्य या गतिविधि के लिए ही बनाई जाती है...अब मामला क्या ये समझो...

आशुः मामला ये है कि थार जैसे घने जंगल में एक आदमी को माइक्रोबॉट द्वारा गोली से मार दिया गया...हांलाकि इस थार जंगल में मानव का प्रवेश अगले दस साल और बंद है, क्योंकि अभी इसमें जैवविविधता विकसित हो रही हैं... लेकिन फिर भी कोई इस क्षेत्र में आए तो उसे मार देना ठीक तो नहीं है...

दादा जीः तुम्हे ये तो पता ही होगा कि थार जंगल पहले थार रेगिस्तान था...

आशुः बिल्कुल पता है और आज नैनोरोबोट के जरिए कहीं की भी जलवायु बदली जा सकती है और मांगल ग्रह पर भी तो यही हो रहा...नैनोरोबोट पूरे मंगल ग्रह का वायुमंडल धरती की तरह बनाने में लगे हैं...

दादा जीः हां...कभी मैने इस विषय पर एक पत्रिका में लेख लिखा था...

शिवांशः ओहो...तब तो दादा जी आप को खुद लिखना होता होगा...कितनी मुश्किल होती होगी और आज तो हमारे सोचने भर से सब छप कर आ जाता है...

दादा जीः ठीक कहा शिवांश बेटे...और बहुत सारी टेक्नोलॉजी इस सोच को ही सही सही फोकस करने में जुटी हैं...

शिवांशः अभी अभी नैनोबॉट के जरिए मेरे पास भी सब जानकारी आ गई है...मामला ये है कि उस व्यक्ति ने मेंढ़क की दुर्लभ प्रजाति को मार कर अपने बैग में रखा था और दूसरे को मारने जा ही रहा था कि तभी माइक्रोबॉट ने अटैक कर दिया था...

आशुः तो सवाल ये है कि पहले मेंढ़क के मारे जाने के समय अटैक क्यों नहीं हुआ और फिर व्यक्ति को मारना इतना आवश्यक क्यों था?

दादा जीः देखा, वर्च्युअल कोर्ट का कमाल और हर किसी के पास एक्सेस है यानी इस चर्चा में हर कोई भाग ले सकता है...पर ये सवाल तो सही है कि जब दूसरे मेंढ़क के मरने पर गोली चलाना सही था, तो बेचारे पहले वाले मेंढ़क के समय क्यों गोली नहीं चलाई गई?

शिवांशः ओहो...माइक्रोबॉट ने पहले चेतावनी दी और जब वो व्यक्ति नहीं माना तो उसने गोली चलाई...अभी अपडेट आया है...मेरे आईलैंस में...

दादा जीः ठीक कहा शिवांश, ये बात अभी अभी सुनील ने कही है...देखा नैनोबॉट्स का कमाल जो तुम्हे हर पल की खबर सीधे दे रहा है...पहले इसके लिए या तो फिर लाइव देखना पड़ता था या फिर बाद में गूगल सर्च करना पड़ता था... खैर मुझे लगता है कि माइक्रोबॉट ने कोई गलती नहीं कि, उसने मानव जीवन का सम्मान रखा लेकिन जब अन्य जीव को हानि पहुंचने ही लगी तो तुरंत एक्शन लिया...

आशुः हां दादा जी...वैसे मानव ने ही एआई को तैयार किया है और मानव हित ही एआई के लिए सर्वोपरी है, उस हिसाब से माइक्रोबॉट का एक्शन थोड़ा परेशान तो कर सकता है...

दादा जीः देखो आशु, उस माइक्रोबॉट की जिम्मेवारी थी, उस जंगल की जैवविविधता की रक्षा करना...और उसने वही किया...और देखो अगर कानून का सख्ती से पालन नहीं हो तो मानव तो इस धरती को ही उजाड़ दे...जैसे आज से पंद्रह साल पहले तक मानव करता रहा है...

शिवांशः ओहो दादा जी, अभी अभी पता चला है कि माइक्रोबॉट को तो किसी स्पाईबॉट से करप्ट करने की कोशिश भी हुई है...यानी मानव आज तक अपनी नष्ट करने...उजाड़ने की हरकतों से बाज नहीं आ रहा है...

आशुः हां...ये तो है...पर ये बॉट्स और अन्य एआई आधारित प्रणालियां किसी भी हैकर्स के अटैक से निपटने में सक्षम हैं और जहां से अटैक ओरिजिनेट हुआ है, उस तक जाकर हमले को नाकाम करने में सक्षम हैं...तो फिर प्रतिक्रिया में इतनी देरी कैसे लगी?

दादा जीः लो आशु मेरे पास अभी–अभी सुनील का अपडेट आया है...कि जो माइक्रोबॉट की प्रतिक्रिया में देरी हुई, उसका कारण उसकी प्रणाली में डाला गया स्पाई प्रोग्राम था...शुरूआत में इसे वाइरस कहते थे, फिर तो ये कई रूपों में आने लगा था...खैर, ये हुआ है कि मौजूदा एआई आधारित प्रणाली में घुसने के लिए लाखो वाइरस के अटैक हर रोज किसी गुप्त स्थान से बैठकर किए जा रहे हैं. ..बस एक सैकेंड की सफलता मिली और एक मेंढ़क एक अपराधी के हाथों मारा गया...

शिवांशः ओह...यानी दादा जी हमने धरती के हर कोने को छानने के लिए माइक्रो ड्रोन भेजे हुए हैं, जो हर समय वीडियो ऑडियो भेजते रहते हैं...और ऊपर से पूरी धरती को इतने शक्तिशाली सैटेलाइट हर समय स्कैन कर रहे हैं...बादलों या किसी और आवरण के बावजूद एआई सभी डाटा के आधार पर उस क्षेत्र का साफ चित्र बनाने में सक्षम है, जो हमें या कैमरे को नज़र भी नहीं आता...तो फिर ये कौन लोग हैं जो इन सब से छुपकर पूरे ढ़ांचे को ढ़हाने में लगे हैं?

आशुः शिवांश ऐसे लोग तो हर समय रहे हैं, कुछ भी करलो ऐसे लोग तो रहेंगे ही जिन्हें हर बात से तकलीफ होगी...कभी ये टेक्नोलॉजी के खिलाफ रहे, कभी सामाजिक मान्यताओं के...तेरे नैनोबॉट ने ये सब नहीं बताया क्या?

शिवांशः बताया था, पर मैंने इस विषय पर ज्यादा रूचि नहीं दिखाई। पर सवाल ये है कि एआई आधारित इतनी प्रणालियां बनी हैं, जो व्यक्ति को सकारात्मक सोच की ओर मोड़ती हैं...फिर ऐसे लोगों पर ये टेक्नोलॉजी कामयाब क्यों नहीं हुईं?

दादा जीः **(हंसते हुए)** होगी शिवांश...ये टेक्नोलॉजी भी कामयाब होगी...अभी करीब बीस साल से ही तो ये पूरी तरह लागू होनी शुरू हुई है, अभी कई लोग इससे दूरी बनाए हुएं है, सभी के दिमाग में तुम्हारी या मेरी तरह नैनोबॉट्स थोड़े ना हैं या खून में साथ बहते नैनोबॉट्स...जो मुझे हर बीमारी से दूर रखते हैं और यहां तक झुर्रियां भी नहीं आने दे रहे...मैं अमर तो नहीं होना चाहता लेकिन इतना जरूर है कि रोग मुक्त जीवन तो टेक्नोलॉजी ने दिया है...अब सोचों हमें जहां भी जाना होता है जैसे घर पर ही आना है तो ताला लगे बंद घर भी हमें खुले मिलते हैं...क्यों?

आशुः क्या दादा जी, हमारे दाईं हथेली में एक चिप है जो दुनिया के हर ताले को खोलने में सक्षम है...बस इसे उस घर का मालिक अनुमति दे दे...तो हम बंद ताले भी आराम से खेलते चले जाते हैं...जैसा अभी घर आने पर होगा...

शिवांशः हां...अब देखो ये टेक्नोलॉजी का ही तो कमाल है कि मैं अभी घर से करीब तीन सौ किलोमीटर दूर हूं और एक उड़न टैक्सी में घर की ओर आ रहा हूं... लेकिन मेरा और आप दोनों का थ्री डी होलोग्राम हमें इस दूरी का अहसास ही नहीं होने देता। आशु भइया आप भी तो अभी करीब सात सौ किलोमीटर दूर हो...लेकिन आप जमीन के अंदर हाइपरलूप से अगले पंद्रह मिनट में घर पहुंच जाओगे और मैं भी...

दादा जीः **(हंसते हुए)** हां भई ये तो है अब, सोचो बगल वाले कमरे को एआई ने पूरा बदलकर कुछ समय के लिए कोर्ट रूम बना दिया है और वहीं से सुनील भी माइक्रोबॉट के मामले की पैरवी कर रहा है...वो भी दस मिनट में आ जाएगा... तब चारों साथ बैठकर बढ़िया खाना खाएंगे मैंने तो खाना प्रिंट करने का ऑर्डर भी दे दिया है...

आशुः अच्छा आपने खाना प्रिंट करने का ऑर्डर हाइड करके दिया है, इसलिए हमें दिखा नहीं...खैर, मुझे तो तेज भूख लग रही है...मेरे सिस्टम चैकबॉट ने भी मैसेज दे दिया है...तो बस अभी पहुंचा...

शिवांशः अरे वो उन लोगों की बात तो बीच में ही रह गई जो पूरी प्रणाली को खत्म करने पर तुले हैं...

दादा जीः भई शिवांश कुछ साल में एआई से हर कोई जुड़ जाएगा...हर प्रकार की नेगगेटिविटी भी खत्म होगी और एक बेहतर जीवन से सभी जुड़ सकेंगे...अब टेक्नोलॉजी रुकेगी थोड़े ना...ये सब उस सैंतीसवीं चाल से ही समझ आ गया था...

आशुः ओहो...फिर वो सैंतीसवी चाल...इसका कोई डाटा भी नहीं मिल रहा...अब तो बता दो दादा जी ये सैतीसवीं चाल क्या है?

दादा जीः **हंसते हुए–** चलो घर पहुंचों...खाने की टेबल पर राज खोलता हूं...लो सुनील खाली हो गया...चलो तुम लोग पहुंचों...

दृश्य परिवर्तन का संगीत...

दादा जीः सुनील लगता है आशु और शिवांश की एयरटैक्सी आ गई...

सुनीलः हां पापा जी, वो दोनों ही हैं...स्टेशन से एकसाथ ही एयरटैक्सी से आ रहे थे...

दादा जीः लो आ गए...

आशु और शिवांशः **(एक साथ)** नमस्ते दादा जी...हलो पापा...

दादा जीः नमस्ते...नमस्ते...आओ...खाना भी तैयार है...बस टेबल पर आना बाकी है...

सुनीलः आओ...तुम दोनों का प्रोजेक्ट टूर कैसा रहा?

आशुः अच्छा रहा...बहुत भूख लग रही है...और देर की तो मेरे नैनोबॉट्स लीवर से ग्लूकोज़ रिलीज़ करवा देंगे...

– हंसी –

रोबोटिक आवाजः खाना लगा दिया है...वेज चिकन, टमाटर के गुणों से भरपूर खीरे का सलाद, रागी के गुणों से भरपूर गेहूं की रोटी और परांठे, प्रोटीन से भरपूर आलू की सब्जी...और बिना मक्खन वाली दाल मक्ख्नी...

शिवांशः अरे वाह दादा जी ये सब आपने प्रिंट करवाया है...वाह...

दादा जीः हां...अब सारा खाना भी थ्रीडी प्रिंटर में तैयार होता है...वरना पहले तो रसोई में पकता था...या फिर बाजार से खाना मंगा लेते थे...अब तो जो बोलो ये एआई प्रणाली तमाम स्वादों को जोड़जाड़कर खाना प्रिंट कर देती है...

सुनीलः ठीक कहा पापा जी...हांलाकि अभी रेस्त्रां वगैरह है लेकिन खाना बनाने वाला प्रिंटर जितनी तेजी से लोकप्रिय हुआ है...शायद और कोई टेक्नोलॉजी नहीं हुई है...और वेज चिकन बोलो तो दालों, मसालों और सब्जियों का ऐसा घालमेल करता है कि असली चिकन और दाल सब्जी से बने चिकन में फर्क ही नहीं पता लगता...

दादा जीः **ठीक** कहा सुनील और नॉन–वेज भी तो बिना किसी जीव को हानि पहुंचाए... थ्रीडी प्रिंटर से लैब में तैयार एक कोशिका से पूरी बर्गर की चिकन पैटी या टिक्की तैयार की जा रही है...अब कम से कम मानव की क्रूरता में तो कमी आई...

आशुः ठीक कहा दादा जी...अब जीन की अदलाबदली करके कुपोषण को दूर तो किया ही जा चुका है...तभी तो सिर्फ खीरे का सलाद खा लो और टमाटर के गुण भी साथ ले लो...और आलू में भी तो रामदाने का जीन डालकर प्रोटीन बढ़ा ही दिया है और इसके अलावा अनेक प्रकार के प्रोटीन अब आलू में आने लगे हैं...और अब तो एथलीटों के लिए अधिक प्रोटीन वाला आलू भी उपलब्ध है...

सुनीलः और आशु एक ज़माने में इन जीनांतरित या कहें जेनेटिकली मॉडिफाइड फसलों का बहुत विरोध हुआ था...खैर...अब ये भी है कि इन फसलों के सेहत और पर्यावरण पर होने वाले प्रभावों का भी अध्ययन अधिक और सटीक हुआ है...एआई की वजह से...

शिवांशः अरे पापा वो जंगल में माइक्रोबॉट द्वारा गोली मारने वाले मामले का क्या हुआ?

सुनीलः शिवांश वो डिटेल मैने भेजे तो हैं...असल में माइक्रोबॉट में वाइरस के द्वारा प्रतिक्रिया में थोड़ी देरी तो हुई...लेकिन सबसे बड़ी बात उस माइक्रोबॉट ने उस व्यक्ति की आंखों से उसका पूरा डाटा निकाल लिया था और इसीलिए गोली चलाने का एक्शन लिया था...

आशुः कौन था वो व्यक्ति?

सुनीलः आशु वो एक बड़े आतंकवादी संगठन से जुड़ा व्यक्ति था जो उस दुर्लभ मेंढ़क की त्वचा पर मौजूद दुनिया के सबसे खतरनाक जहर का जीन बैक्टिरया में डालकर पूरी दुनिया में फैलाने के चक्कर में था। उस माइक्रोबॉट को आदेश हमारी सुरक्षा प्रणाली ने ही दिया था...पर मानवाधिकार वाले तो इसे मुद्दा बनाते ही हैं...तो माइक्रोबॉट को सुरक्षा से हटाकर फिर से आदमियों को चौकीदार रखने की बात कह रहे थे...जिसे कोर्ट ने ठुकरा दिया है...

शिवांशः यानी माइक्रोबॉट बा–इज्जत–बरी...

– हंसी –

सुनीलः शिवांश ये बा–इज्जत–बरी कहां से सीखा...

शिवांशः पापा ये तो दादा जी ने एक पुरानी फिल्म दिखाई थी...उसी से पता चला...अंत में हीरो या उसके पिता जी बा–इज्जत–बरी हो गए थे...

– हंसी –

आशुः खाना तो बढ़िया रहा...थैंक्यू दादा जी...

दादा जीः वेलकम...और अच्छी बात ये है कि अब पुराने समय की तरह बर्तन धोने नहीं पड़ते...या तो इन्हें खा लो या ये रिसाइकिल होकर थ्रीडी प्रिंटर से नए बर्तन के रूप में आ जाते हैं...

शिवांशः तो ये तो हर घर में होता है...इसमें ऐसी क्या खास बात है?

सुनीलः तुम नहीं समझोगे शिवांश...अगर बर्तन धोने वाली छुट्टी ले ले तो कितनी मुसीबत होती थी...आज तो सोच भी नहीं सकते...

आशुः तो इसी बात पर दादा जी आप भी बता ही दो...

दादा जीः क्या बताना है आशु?

आशुः वो सैंतीसवीं चाल...

सुनीलः सैंतीसवीं चाल? वो गो वाली पापा जी?

दादा जीः अरे वाह...तुम्हे याद है सुनील...

सुनीलः क्या पापा जी...आप ने ही तो लिखा था कि इस सैंतीसवीं चाल ने मानव पर मशीन का वर्चस्व स्थापित कर दिया था...जब पहली बार ये स्थापित हुआ कि मशीन सिर्फ आदेश ही नहीं मानती...अपना बेहद इंटेलिजेंट दिमाग भी रखती है...

आशुः **(हैरानी से)** ऐसा क्या हुआ था?

शिवांशः और कब हुआ था?

दादा जीः हां...भई ये दुनिया का सबसे मुश्किल खेल था जिसे गो कहतें हैं और इसे अल्फा गो नाम के एक कंप्यूटर प्रोग्राम और गो खेल के अट्ठारह बार विश्व चैंपियन ली सुडोल के बीच खेला गया था...

आशुः अच्छा गो बोर्ड गेम...अरे वो तो बहुत मुश्किल है इसमें काफी सारी रणनीति और क्रिएटिविटी भी चाहिए...

सुनीलः बस आशु ये ही गो खेल...जो नौ से मार्च दो हजार सोलह में अल्फा गो और ली सुडोल के बीच खेला गया था...पांच गेम खेले गए थे...

शिवांशः और कंप्यूटर जीत गया था, है ना?

दादा जीः हां शिवांश, जीत तो एआई आधारित कंप्यूटर ही गया था पर इससे पहले उन्नीस सौ सत्तान्वे में डीप ब्लू और विश्व चैंपियन गैरी कॉस्पारोव के बीच शतरंज का खेल भी हुआ था, जिसे कंप्यूटर ने ही जीता था...पर तब भी मशीनों की ताकत पूरी तरह इस्टेब्लिश्ड नहीं हुई थी...असल में अल्फा गो जीता कैसे ये महत्वपूर्ण है...

शिवांशः कैसे जीता दादा जी?

सुनीलः उस खेल के बारे में मैं बताता हूं...आशु...अल्फा गो और सुडोल के बीच में पांच गेम खेले गए जिसमें से चार अल्फा गो ने जीते थे...पहला जीतने के बाद अल्फा गो ने दूसरे गेम में जो किया उसने बता दिया था कि अब एआई का जमाना आ गया है और मशीन मानव से बेहतर नही ंतो कम भी नहीं हैं...

आशुः ऐसा क्या हुआ था?

दादा जीः देखो जो चार गेम ली ने हारे थे उसमें ली सुडोल ने हार मान ली थी...लेकिन कमाल हुआ था दूसरे गेम में...दूसरे गेम में अल्फा गो ने सैंतीसवीं चाल में एक ऐसी चाल चली जो गो खेल के हजारों वर्ष के इतिहास में ना तो कभी चली गई और ना ही सोची गई...इस शानदार सैंतीसवीं चाल से ये स्थापित हुआ कि अब कंप्यूटर सिर्फ आदेश पर ही नहीं चल रहा बल्कि डाटा के आधार पर सोचने समझने भी लगा और कई मामलों में तो जोखिम भी उठाने लगा है... एआई सिर्फ लॉजिकल ही नहीं है बल्कि अब क्रिएटिव भी हो गई है...

सुनीलः हां...पापा जी, मुझे याद है आपने मुझे आठवीं या नवीं में क्लास में ये बताया था और कहा था कि उस दिन मानव ने अपना भविष्य एआई के हाथों में दे दिया था...कहते हैं कि अल्फा गो की दूसरे गेम में वो सैंतीसवीं चाल दस हजार चालों में से एक बार ही होती है...

शिवांशः पर आज भी तो मानव ही तो कंट्रोल में है?

आशुः क्या शिवांश...ये खेल की हार जीत से कोई मानव की अक्ल थोड़े ना छीन लेगा...धरती का स्वामी तो मानव ही रहेगा...और जल्द ही अन्य ग्रहों का...

सुनीलः देखा पापा जी, ये एआई के ज़माने का बच्चा है...आत्मविश्वास से भरा...हमारे समय में ही सभी ने कंप्यूटर तो सीख लिया था और हर बच्चे बच्चे को कोडिंग आती है जैसे कभी क, ख, ग या ए, बी, सी, डी...आती थी...

दादा जीः ठीक कहा सुनील पर आशु मानव आज भी डोमिनेट करता है...और ऐसा क्यों है ये दो हजार सोलह में खेले गए, उसी गेम में पता चल गया था...

आशुः हैं...वो क्या था...दादा जी? जब ली सुडोल हार ही गया था तो फिर ऐसा क्या हुआ जिससे मानव की अक्ल का लोहा आज भी माना जाता है...

सुनीलः पापा जी ऐसा कुछ आपने मुझे तो बताया नहीं...ऐसा क्या हुआ था?

दादा जीः अठ्ठहत्तर वीं चाल...

शिवांशः हैं...एक और चाल...अठ्ठहत्तर वीं चाल? अब ये किसने चली थी?

दादाजीः असल में जब ली सुडोल लगातार तीन गेम हार गया तो पूरी मानव सभ्यता का सूझबूझ ही दांव पर लगी थी...और ली का अपना सम्मान भी...अब अल्फा गो कंप्यूटर प्रोग्राम तो इन सभी भावनाओं से दूर था...लेकिन मानव में तो ईगो भी है, आत्मसम्मान भी...बस तो चौथे गेम में ली सुडोल ने अठ्ठहत्तर वीं चाल ऐसी चली कि मानव का अत्मविश्वास, सम्मान, इंटेलिजेंस और सृजनात्मकता... फिर से स्थापित हो गई...और पता है विशेषज्ञों ने इस ली की इस चाल के बारे में क्या कहा?

आशुः दस हजार में से एक वाली चाल!

दादा जीः अरे वाह आशु...बिल्कुल सही...पर तुमने कैसे जाना?

आशुः अरे दादा जी, मानव भावनाओं में घिरा रहता है...इमोशनल है...पर इंटेलिजेंट है और ऐसा दिमाग जिसका मुकाबला दुनिया क्या, विश्वभर की एआई जमा करके भी नहीं किया जा सकता...

दादा जीः वाह आशु बिल्कुल ठीक कहा...देखा दोनों चालों का स्तर एक ही था...ना कोई कम ना कोई ज्यादा...पर तुमने सही कहा कि मानव तो भावुक व्यक्ति है... उसका दिमाग एक ही टास्क पर थोड़े ही फोकस होता है, उसमें कई बातें चलती हैं...

शिवांशः बिल्कुल सही कहा दादा जी...अब जैसे मेरे दिमाग में भी कई बातें घूम रहीं हैं. ..

सुनीलः क्या शिवांश?

शिवांशः ये ही पापा कि मेरा पेट तो भर गया और नैनोबॉट के हिसाब से सारी आवश्यक कैलोरी भी आ गई हैं...पर...

दादा जीः पर क्या शिवांश?

शिवांशः पर ये ही दादा जी...मेरा मन नहीं भरा है...क्या आलू–गोभी और पनीर के पकौड़े चाय के साथ मिल सकते हैं...

– तेज हंसी –

दादा जीः हां...हां...क्यों नहीं...अरे इन एआई के चक्करों में अपने मन को थोड़े ना मारेंगे... सभी के लिए बनवाते हैं...

सुनीलः पर पापा आपकी शुगर???

दादा जीः क्या सुनील...सब ख्याल हम ही रखेंगे...कुछ तो ये एआई भी रखेगी...इसके बॉट्स क्यों शरीर में डालें हैं...आज चीनी वाली चाय के साथ पकौड़े भी चलेंगे और देखते हैं कि मानव की इस नई अठ्ठहत्तर वीं चाल का एआई के पास क्या तोड़ है...

– सभी हंसते हैं –

– समाप्त –